मनोविज्ञान के अन्य स्कूल या सम्प्रदाय के समान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का प्रादुर्भाव अचानक नहीं हुआ है। इसके संस्थापना का एक इतिहास है क्योंकि इसके कुछ पूर्ववर्ती कारक (antecedent factors) हैं जिसका वर्णन निम्नांकित हैं—

1. इममैन्यूएल कान्ट (*Immanuel Kant*)—आई॰ कान्ट के योगदानों पर अध्याय-3 में विचार किया जा चुका है। कान्ट ने प्रत्यक्षण के एकात्मक स्वरूप (unity nature) पर बल डाला था। इसका मतलब यह हुआ कि कान्ट इस बात पर बल डाले थे कि प्रत्यक्षण को उसके विभाज्य अंशों (divisible parts) में बाँटना सम्भव नहीं है। कान्ट के इस विचारधारा का गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों पर काफी प्रभाव पड़ा। इसके अलावा, कान्ट का सहजवाद (nativism) द्वारा यह भी दिखला दिया गया था कि समय एवं स्थान के प्रत्यक्षण की क्षमता सीखना तथा अनुभव (experience) पर आधारित नहीं होता है बल्कि वह जन्मजात (inborn) होता है। इसका भी प्रभाव गेस्टाल्ट मनोविज्ञानिकों पर पड़ा जिन्होंने प्रत्यक्षण में सीखने की भूमिका को महत्त्वहीन बतलाया और यह स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षण में संगठन के तरीके बिलकुल ही स्वाभाविक (natural) या जन्मजात होते हैं।

2. विलियम वुण्ट तथा जॉन स्टुआर्ट मिल (*Wilhelm Wundt and John Stuart Mill*)—वुण्ट ने सर्जनात्मक संश्लेषण (creative synthesis) के संप्रत्यय का प्रतिपादन किया था जिसमें समग्रता (whole) तथा उसके अंशों के योग (sum of parts) को एक-दूसरे से अलग किया गया था। सर्जनात्मक संश्लेषण के नियम के अनुसार चेतन के दो या दो से अधिक तत्त्व आपस में मिलकर ऐसी अवस्था (state) का निर्माण करते हैं जिसकी विशेषता उन तत्त्वों की

Scanned with CamScanner

विशेषता से भिन्न एवं स्वतंत्र होती है। इस निगम का अंदाज जॉन स्टुआर्ट मिल ने पहले ही अपने 'मानसिक रसायन' (Mental chemistry) के संप्रत्यय में लगा चुके थे। इस तरह मिल तथा बुण्ट दोनों ही यह विचार व्यक्त कर चुके थे कि तत्त्वों को किसी समग्रता में संयोजित होने से उसकी कुछ अपनी नयी विशेषताएँ उत्पन्न हो जाती है। इस विचार का प्रभाव गेस्टाल्ट मनोविज्ञान पर काफी पड़ा जिन्होंने यह दावा किया कि समग्रता का प्रत्यक्षण उनके अंशों के प्रत्यक्षण का योग नहीं होता है। समग्रता की विशेषताएँ उनके अंशों (parts) की विशेषता से भिन्न होती है।

3. फ्रैंच ब्रेनटानो एवं कार्ल स्टम्फ *(Franz Brentano and Carl Stumpf)*—इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के योगदानों की चर्चा अध्याय-5 की जा चुकी है। इन दोनों मनोवैज्ञानिकों की मनोवृत्ति विश्लेषण-विरुद्ध (anti-analytical) थी। वे लोग तात्विक अंतर्वस्तु (elemental content) के मनोविज्ञान पर कड़ी आपत्ति उठाये थे। इन लोगों का विचार था कि मन व्यक्ति की अनुभूतियों का निष्क्रिय प्राप्तिकर्त्ता (passive receiver) नहीं होता है। इन लोगों ने प्रत्यक्षण के अध्ययन पर बल डाले थे परन्तु उसे विभिन्न तत्त्वों से विश्लेषण के विचार का विरोध किया था। इन लोगों के इस तरह की मनोवृत्ति का गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों पर सीधा प्रभाव पड़ा। शायद यही कारण है कि गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रत्यक्षण के समग्र रूप से अध्ययन पर बल डाला गया न कि उसे विभिन्न अंशों में विश्लेषित करने पर। इन लोगों के अनुसार समग्रता उसके अंशों (parts) के प्रत्यक्षण का योग नहीं होता है।

4. अर्नस्ट मैक तथा क्रिश्चियन वॉन अहरेन्फेल्स *(Ernst Mach, 1838-1916 and Christian Von Ehrenfels, 1859-1932)*—मैक एक भौतिकशास्त्री (physicist) थे जो मनोविज्ञान के इतिहास में पिछले दरवाजे से प्रवेश किये (Marx & Cronan Hillix, 1987)। मैक ने दो नये प्रकार के संवेदनों का उल्लेख किया था—*दिक् प्रकार का संवेदन* (Sensation of space form) जैसा कि त्रिभुज या अन्य ज्यामितीय चित्र के प्रत्यक्षण से उत्पन्न होता है एवं *समय-प्रकार का संवेदन* (time form sensation) जैसा कि लय या राग (melody) के प्रत्यक्षण से उत्पन्न होता है। वे इन दोनों तरह के संवेदनों को उनके तत्त्वों से स्वतंत्र माना। जैसे, कोई त्रिभुज लाल या हरा या अन्य कोई रंग का हो सकता है तथा छोटा या बड़ा हो सकता है। लेकिन फिर भी व्यक्ति उसे एक त्रिभुज के रूप में प्रत्यक्षण करता है। उसी तरह से कोई लय या राग चाहे वह किसी तरह के यंत्र से क्यों न उत्पन्न किया जा रहा हो, उसे व्यक्ति मूलतः एक लय या राग के रूप में ही प्रत्यक्षण करता है। संवेदन के इन प्रकारों तथा उसकी व्याख्या का गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। अहरेन्फेल्स (Ehrenfels) मूलतः एक दार्शनिक (philosopher) थे तथा वे एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किये जिसका नाम था *प्रकार-गुण का सिद्धान्त* (theory of form qualities)। इस सिद्धान्त में वे मैक (Mach) के विचारों को भी सम्मिलित कर लिए हैं। इन्होंने यह स्पष्टतः बतलाया कि अनुभव में कुछ नये गुण या तत्त्व होते हैं जो संवेदन में पहचान किये गए गुणों से भी परे होते हैं। जैसे—लय या राग में एक सामयिक पैटर्न होता है जो वैयक्तिक संवेदन गुणों (individual sensation terms) (जो उसके तत्त्व होते हैं) से भिन्न होता है। यही बात दिक् प्रकार (space form) के आयाम के लिए भी सही दीखता है। इनके नये तत्त्व मस्तिष्क में उपस्थित होते हैं, लेकिन भौतिक वस्तुओं में नहीं होते हैं। प्रकार-गुण के संप्रत्यय का गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा जिन्होंने उसे अपनी मुख्य व्याख्या में सम्मिलित कर लिए।

5. गौटिनजेन विश्वविद्यालय का प्रयोगशाला कार्य *(Laboratory works at Gottingen University)*—गौटिनजेन विश्वविद्यालय में किये गए प्रयोगाशाला शोध भी गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के प्रमुख पूर्ववर्ती कारक (antecendet forces) रहे हैं। जी॰ ई॰ मूलर (G. E. Muller) द्वारा इस विश्वविद्यालय में कई प्रयोगशाला शोध किए गए जो गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के दृष्टिकोण का आधार बने। तीन अन्य मनोवैज्ञानिकों जो वर्दाइमर, कोहलर तथा कौफ्का के ही उम्र के थे, ने भी जी॰ ई॰ मूलर के प्रयोगशाला कार्य को काफी सराहा। वे तीन व्यक्ति थे—ई॰ आर॰ जेनेस्क (E. R. Jenesk1883-1940), डेविड काज (David Katz, 1884-1957) तथा इडगार रूबिन (Edgar Rubin, 1986-1951)। जेनेस्क का मत था कि दृष्टि तीक्ष्णता (visual acuity) की व्याख्या करने में उसके बड़े अन्तःक्रियात्मक तन्त्रों (interacting systems) को ध्यान में रखना जरूरी है क्योंकि साधारण आणविक दृष्टिकोण (elementary atomistic approach) से इसकी व्याख्या सम्भव नहीं है। उसी तरह से काज ने रंग प्रत्यक्षण का अध्ययन किया और 1911 में इस पर एक पुस्तक का भी प्रकाशन किये जिसमें तीन तरह के रंगों अर्थात् सतही रंग (surface colour), प्रबल रंग (volume colour) तथा फिल्म रंग (film colour) का संवृत्तिक व्याख्या (phenomenlogical explanation) किये हैं। वे इन रंगों की उस व्याख्या को अस्वीकृत कर दिये जिनमें रंग के संवेदन की व्याख्या अन्य तत्त्वों के साथ मिलकर की गयी थी तथा वे उस

Scanned with CamScanner

व्याख्या को पसन्द किये जिसमें प्रत्येक तरह के रंग का प्रेक्षण सम्भव था। रूबिन आकृति (figure) तथा पृष्ठभूमि (background) के प्रत्यक्षण पर कार्य प्रारंभ किये। उनका मत था कि प्रत्यक्षण में सम्पूर्ण उद्दीपन परिस्थिति का कुछ अंश का प्रत्यक्षण व्यक्ति स्पष्ट रूप से करता है तथा कुछ अन्य अंश का स्पष्ट प्रत्यक्षण करता है। स्पष्ट रूप से किये गए प्रत्यक्षण को आकृति (figure) तथा अस्पष्ट रूप से किये गए प्रत्यक्षण को पृष्ठभूमि (background) कहा जाता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि विशेष हालातों में आकृति-पृष्ठभूमि का प्रत्यक्षण पलट भी जाता है। इन तीनों मनोवैज्ञानिकों के कार्यों को गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिक महत्त्व दिया गया और उसे तुरन्त ही अपने ढाँचा में समावेश कर लिए।

स्पष्ट हुआ कि गेस्टाल्ट मनोविज्ञान अन्य मनोवैज्ञानिक सम्प्रदायों के समान धीरे-धीरे कई पूर्ववर्त्ती कारकों के प्रभाव के कारण जन्म लिया। वर्दाइमर, कोहलर तथा कौफ्का ने इस सम्प्रदाय की स्थापना उन्हीं प्रभावों से प्रेरित होकर किये थे।

Scanned with CamScanner